करहु बिलम्ब न भ्रात अब उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु प्रथम जो सब को मूल।

–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

ISSN 2321-5704

भाषा भारती • अंक 8, वर्ष 8, सितम्बर 2021

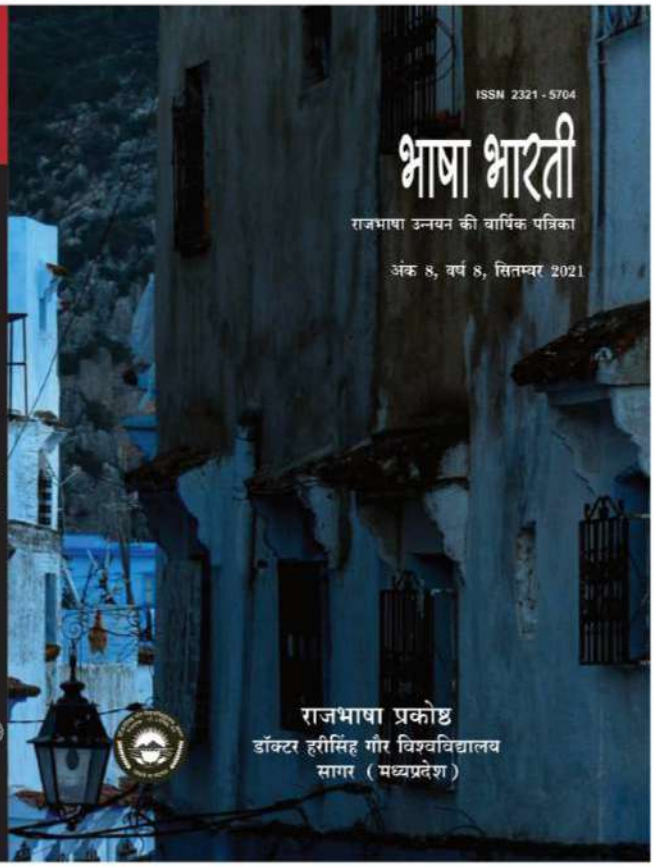

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

अंक 8, वर्ष 8, सितम्बर 2021

राजभाषा प्रकोष्ठ
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (मध्यप्रदेश)

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

ISSN 2321–5704

(वर्ष-9, अंक-8, सितम्बर, 2021)

संरक्षक

कुलपति, प्रो. जे.डी. आही

परामर्शदाता

कुलसचिव, श्री संतोष सोहगौरा

सम्पादक मण्डल

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

श्री संतोष सोहगौरा

डॉ. शशिकुमार सिंह

डॉ. नीरज उपाध्याय

डॉ. पंकज सिंह

डॉ. आफरीन खान

सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर

सहायक सम्पादक

अभिषेक सक्सेना

राजभाषा प्रकोष्ठ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश)–470003

दूरभाष : (07582) 297118

ई-मेल : hindicell2015@gmail.com

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

ISSN 2321 – 5704

वर्ष 9, अंक 8

सितम्बर, 2021

© *सर्वाधिकार सुरक्षित*

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :

हिन्दी अधिकारी, राजभाषा प्रकोष्ठ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (म.प्र.)–470003

दूरभाष : (07582) 297118

ई-मेल : hindicell2015@gmail.com

मूल्य : निःशुल्क आन्तरिक वितरण हेतु

'भाषा भारती' में प्रकाशित रचनाकारों के विचार से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शब्द संयोजन

विनोद रजक

डिजिटल संस्करण

रामकथा में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति के आदर्शमय जीवन-मूल्य

- नागेश दुबे

रामकथा का वर्णन सर्वप्रथम वाल्मीकि ने अपनी रामायण में किया है। 'रामायण' आदर्श जीवन मूल्यों का महाकाव्य है। रामचन्द्र जी के आदर्श चरित्र को कालान्तर में देश व विश्व की अन्य भाषाओं में राम कथानक के रूप में रचित किया गया। रामकथा, भारतीय संस्कृति का आधार है। रामकथा का वर्णन प्रत्येक भाषा के साहित्यकारों ने किया है। भारतीय संस्कृति के प्रमुख अंग हमारे रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार राम मय है। रामकथा में आदर्शमय सौन्दर्य है। रामकथा में सभी रचनाकार, राम के प्रति आस्था, श्रद्धा व भक्ति रखते हैं।

'मर्यादा' श्रीराम की कथा का केन्द्रीय भाव है। श्री राम का मर्यादित रूप भारतीय जनमानस को सदैव, प्रभावित करता रहा है। रामकथा में समग्र भारतीय जीवन की परम्परा, संस्कृति, पौराणिकता एवं ऐतिहासिकता तो है ही, मानव मात्र की शाश्वतता भी, रामकथा ही है।

वाल्मीकिकृत रामायण एक राष्ट्रीय महाकाव्य स्वीकार किया गया है। इससे प्रेरित होकर अनेक महाकाव्य, काव्य, नाटक, पुराण आदि लिखे गये। रामकथा के माध्यम से राम एक ऐसी संस्कृति के प्रतीक बन गये जिनके माध्यम से प्रत्येक युग में समाज ने अपनी प्रत्येक समस्याओं का समाधान खोजा।

वाल्मीकिकृत रामायण में बतलाया गया है कि भगवान विष्णु ने श्रीरामचन्द्र अवतार में अवतरित होकर अपने प्रत्येक व्यवहार में मर्यादित आदर्शमय जीवन प्रणाली से मानव जाति को यह दिखलाया है कि मनुष्य मात्र को किस प्रकार से संसार के दुखों का सामना करते हुए धर्म का पालन करना चाहिए। रामायण के अनुसार कर्म, भक्ति और ज्ञान इन तीनों कसौटियों पर भगवान श्रीराम का जीवन हम सभी के लिए आदर्शमयी शिक्षा देता है। रामायण में वर्णित रामकथा में भगवान श्रीराम ने अपने गुरूजन, माता, विमाता, पिता, भ्रातगण, मित्र, सहायक, सेवक, सर्वसाधारण प्रजा आदि सभी सम्बन्धियों के साथ यहाँ तक कि अपने शत्रुओं के साथ भी आदर्श व्यवहार किया, जो मानव मात्र व मानव संस्कृति के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

श्रीरामचन्द्र जी अपने माता, पिता, गुरू आदि खास सम्बन्धियों के अतिरिक्त अरण्यवासी गुहवासी तथा पशुरूप में आये हनुमान आदि वानरगण और राक्षस जाति के विभीषण आदि को उनके प्रेम व भक्ति के वश में होकर उन्हें अपनाया व उनकी सहायता की।

मानव संस्कृति की रक्षा व कल्याण करने की दृष्टि से आचार-व्यवहार, युद्धवीरता, धार्मिक शासन (रामराज्य) आदि के पश्चात् जब हम उपासना और ज्ञान की दृष्टि से देखते हैं तो श्रीरामकथा की महिमा के रामायण व पुराणों में ही नहीं वर्णित है वरन् सीतोपनिषद्, रामरहस्योपनिषद, रामतापिन्युपनिषद, मुक्तोपनिषद् आदि में भी वर्णित है जिनमें मानव संस्कृति के प्रति श्रीरामचन्द्र जी का योगदान वर्णित है।

राम, मानव-संस्कृति के उत्थान के प्रतीक हैं। राम कथा का वर्णन उपर्युक्त पुराणों व उपनिषदों में तो हुआ ही है। भगवान शंकर भी सर्वदा राम नाम का जाप करते रहते हैं। वे माता पार्वती से कहते हैं कि–

"रामरामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।। (रामरक्षा स्त्रोत, पद संख्या-38)

रामायण का जितना अधिक लोकपरिग्रह है दूसरे किसी का नहीं।

रामायण केवल इतिहासपरक ग्रंथ ही नहीं है वरन् यह महाकाव्य भी है। इसे आदि काव्य होने का गौरव प्राप्त है। रामायण एक महान सांस्कृतिक धर्मग्रन्थ है। रामायण में मानव जीवन के विविध सांस्कृतिक पक्ष आदर्शरूप में वर्णित हैं। रामायण, मानव संस्कृति को वर्णित करने वाला मानव धर्मशास्त्र है।

रामकथा एक निष्प्राण कथा की भांति ही नहीं वरन् एक नूतन सभ्यता, नवीन भारत के पुनर्निर्माण के लिए, एक सन्देश देने वाली मानव जीवन व मानव संस्कृति के पथ को प्रदर्शित करने वाली कथा है। इसका (रामायण) संदेश है कि तपसः विजयम, तपसः विजयम् अर्थात तपस्या से विजय प्राप्त करो। भगवान राम अपनी प्यारी अयोध्या, अपने प्यारे घर विजयी होकर लौटते हैं। इसके पूर्व उन्होंने वर्षों तपोवन में व्यतीत किये। उन्होंने तपोवन जीवन व्यतीत किया और विजयी हुए। केवल तपस्या से ओतप्रोत क्रियात्मक शक्ति में ही भारत ही नहीं वरन् समस्त संसार के नवयुग की आशाएँ निहित हैं। हमें, रामकथा से प्रेरणा मिलती है कि अपने स्वर्णिम जीवन से लक्ष्य को, मानव संस्कृति के उत्थान को हम अपनी तपस्या की आंतरिक भावना, अपने आदर्श की शक्ति से प्राप्त कर सकते हैं।

रामायण तथा राम कथा को वर्णित करने वाले अन्य ग्रन्थ, भारतीय संस्कृति की अतुलनीय सम्पति हैं। रामकथा मानव मात्र के उच्चतम आदर्श स्थापित करने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के ऊँचे आदर्श का इतिहास है। रामायण व रामचरित मानस को मात्र काव्य ग्रन्थ कहना उनका अपमान करना है। उसमें तो भक्ति रस का प्रवाह बहता है जो मानव जीवन तथा भारतीय संस्कृति को जीवन्त कर देता है।

रामायण, रामचरित मानस व अन्य रामकथानक ग्रंथों में हिन्दू गृहस्थ जीवन का आदर्श बतलाया गया है। रामकथा के आदि ग्रन्थ रामायण में महाकवि वाल्मीकि जी ने भारतीय संस्कृति के उत्थान से सम्बन्धित मानव मात्र के लिए अनेक गुणों का वर्णन किया है, जिनमें मानवीय आदर्श व भारतीय संस्कृति निहित है, जैसे–

1. पिता की आज्ञा का पालन
2. सत्यशीलता
3. एक पत्नीव्रत
4. आश्रितों की रक्षा करना
5. प्रतिज्ञा की पूर्ति
6. वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा के अनुसार आचरण करना
7. वृद्धों, देवता तथा गुरूजनों की सेवा करना
8. मधुर भाषण
9. अतुलनीय पतिव्रत
10. बड़े भाई के रूप में सुख एवं दुख का अनुभव
11. न्याय कृत मार्ग का अनुसरण करना
12. प्रत्युपन्नमतित्व
13. प्रभु भक्ति आदि का समावेश, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र में रहा।

रामकथा में किसी भी स्थल पर श्रीरामचन्द्र जी में आत्म प्रशंसा लेशमात्र भी दिखलायी नहीं देती।

मानव-जीवन को सार्थक बनाने के लिए अपनाये जाने वाले उपायों को सुगमता के साथ जानने के लिए, रामायण ही सर्वोत्तम ग्रंथ है। इसी एक कारण से ही भारतीय विद्वानों ने ही नहीं वरन् इंग्लैण्ड, अमेरिका, जर्मनी आदि देशों के समाज शास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी मुक्त कण्ठ से रामायण व उसमें वर्णित रामकथा की प्रशंसा की है।

रामायण व रामचरित्र मानस में वर्णित श्रीरामचन्द्र जी का चरित्र अत्यंत सरल, नीति बोधक और प्रत्येक दृष्टि से मर्यादा को लिये हुए है। मानव जीवन व मानव संस्कृति में प्रत्येक व्यक्ति को पुत्र, बन्धु, मित्र, शत्रु, पति आदि सम्बन्धों में व्यवहार करना पड़ता है तथा कुछ को राज्यसत्ता भी संभालना पड़ती है। उत्तम पुत्र, उत्तम मित्र, उत्तम शत्रु, उत्तम पति और उत्तम राजा आदि सभी दृष्टियों से भगवान श्रीरामचन्द्र जी का चरित्र मर्यादा स्वरूप है। आज भी उनका चरित्र हजारों वर्षों बाद भी मानव मात्र के लिए आदर्शमय होकर हमारे आचरणों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य डाल रहा है।

श्रीराम, उत्तम पुत्र थे उन्होंने पिता की आज्ञा का पालन करना सर्वोत्तम धर्म माना क्योंकि पिता की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म है। उत्तम पुत्र को पिता की कठोर आज्ञा का भी

पालन करना चाहिए। कठोर आज्ञा का भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। यही हमारे समाज की मर्यादा है, क्योंकि यह शरीर पिता से ही प्राप्त हुआ है। अतः पिता की आज्ञा का पालन करना पुत्र का परम कर्त्तव्य है। परन्तु आज के समय में तो पुत्र पिता का धन लेना चाहता है, पिता से धन त्याग की आज्ञा भी नहीं लेना चाहिए वे धन-जायजाद के बंटवारे के लिए अदालत में दावा दायर करने तैयार हो जाते हैं।

भरत और राम में उत्तम बन्धु का आचरण देखने को मिलता है। सुग्रीव व विभीषण के सम्बन्ध में श्रीराम ने उत्तम मित्र का आदर्श आचरण दिखलाया। स्वार्थ छोड़कर मित्र का कार्य करना, उसे प्रतिज्ञा पूर्वक निवार्हन, यही मित्र का लक्षण होना चाहिए।

रावण अंत तक प्रभु श्रीराम से शत्रु बनकर लड़ता रहा परन्तु जब वह युद्ध में मारा गया तब प्रभु श्रीराम ने विभीषण से कहा कि यह शत्रुता मृत्यु पूर्व तक थी, मृत्यु के पश्चात् शत्रुता समाप्त हो गयी। उसका अंतिम संस्कार यथोचित सम्मान के साथ करो।

उत्तम पति के रूप में मर्यादित आचरण वाले हैं प्रभु श्रीराम। वे राजा होकर भी आजीवन एक पत्निव्रतधारी रहे। राम की पत्नी माता सीता का चरित्र भी आदर्शमय स्वरूप में वर्णित है। इसीलिए ही हिन्दु समाज में स्त्रियों का आचरण अन्य समाजों की अपेक्षा अधिक प्रशंसनीय है। उन पर माता सीता के आदर्श पत्नि के चरित्र का प्रभाव है।

उत्तम राजा के आदर्श को स्थापित करने के लिए प्रजा के द्वारा सीता जी की पवित्रता पर प्रश्न उत्पन्न होने पर पति धर्म की अपेक्षा राजधर्म को प्रमुखता देते हुये उत्तम राजा के आदर्श को स्थापित करते हुये उनका परित्याग किया, परन्तु एक पत्निव्रत का पालन किया। उन्होंने लोकमत को आदर दिया।

आदर्श पिता, आदर्श माता, आदर्श भ्राता, आदर्श ग्रहणी, आदर्श मित्र, आदर्श सहचर, आदर्श अनुचर, आदर्श मंत्री, आदर्श पुरोहित, आदर्श सेवक और आदर्श पड़ोसी आदि हिन्दु गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित सभी सम्बन्धों को महाकवि वाल्मीकि जी ने रामायण में आदर्शरूप में वर्णित किया हैं। उन्होंने आदर्श हिन्दु गृहस्थ जीवन को वर्णित किया उसका अनुसरण कर हम आज भी गृहस्थ जीवन के आदर्श को अपनाकर आनंदमयी जीवन का आनंद उठा सकते हैं।

महाकवि वाल्मीकि जी के बाद भारत में अनेक बड़े-बड़े महाकवि हुए जिन्होंने रामकथा को आधार मानकर अपने असाधारण कवित्व के द्वारा रामकथा को वर्णित कर समाज व मानव संस्कृति का उत्थान किया। इनमें प्रमुख है– तुलसीदास, राजशेखर-बालरामायण, कालिदास-रघुवंश, भवभूति-उत्तर रामचरित आदि कवियों ने भी रामकथा के आधार पर अपने-अपने ग्रंथों की रचना कर रामकथा को जन-जन तक पहुँचाया।

वाल्मीकि कृत रामायण के पश्चात गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस ही एक मात्र ऐसा ग्रन्थ (महाकाव्य) है जो जन-जन के मानस पटल पर छाया हुआ है। गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरितमानस की रचना राममय होकर की है। रामचरित मानस ने पूरे हिन्दु समाज को राममय कर दिया। गोस्वामी जी ने रामचरितमानस के माध्यम से रामभक्ति के साथ-साथ शील, आचार, मर्यादा तथा लोक कल्याण का संदेश प्रदान कर हिन्दु समाज में नव जीवन का संचार किया। उन्होंने मानव जीवन के आदर्शों की स्थापना के लिए रामकथा (रामचरितमानस) के माध्यम से आदर्शमय भारतीय संस्कृति की आधारशिला रखी।

मानव को आदर्शपूर्ण मानव तथा गृहस्थ को आदर्श गृहस्थ बनाने के लिए रामकथा के आदर्श को अपनाये जाने की आवश्यकता है। राम के आदर्श व सीता जी के आदर्श आचरण को अपनाकर प्रत्येक मनुष्य, प्रत्येक गृहस्थ अपने जीवन को पूर्ण कर सकता है।

महाकवि वाल्मीकि जी ने ऐसे ही पूर्व आदर्श मानव स्वरूप में राम के चरित्र को वर्णित किया है। रामायण हमारे भारत वर्ष का प्राचीन इतिहास का पूरक है। इससे हमें राजनीति, वर्णाश्रम व्यवस्था की महत्ता, गृहस्थ धर्म, राजा प्रजा के सम्बन्ध का परिचय मिलता है, इनका आदर्श स्वरूप का पता चलता है। यह एक उत्तम काव्य है जो हमारा मार्गदर्शन करता है। रामकथा की प्रासंगिकता हर काल व हर देश के लिए है।

रामकथाओं के राम, भारतीय संस्कृति के आदर्श हैं। मानवीय जीवन मूल्यों के प्रति राम का व्यक्तित्व विशेष आकर्षण उत्पन्न करता है। राम के आदर्शमय चरित्र ने भारतीय जीवन के सभी पक्षों का आदर्शमय स्वरूप सामने रखा है।

प्रोफेसर
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संदर्भ -

1. वाल्मीकि कृत-रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.)
2. गोस्वामी तुलसीदास कृत - रामचरित मानस, गीताप्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.)
3. कल्याण-श्री रामायण अंक, गीताप्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.)
4. कल्याण-श्रीरामवचनामृतांक, गीताप्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.)
5. भारतीय रामकथा साहित्य का स्वरूप-विकास सम्पादक - प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (म.प्र.)
6. रामकथा स्त्रोत, गीताप्रेस, गोरखपुर (उ.प्र.)